मूल्य रू. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १७८ • मई-२०२२

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

रामनवमी को अहमदाबाद मंदिर में श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

जेतलपुर मंदिर के १९६ वे पाटोत्सव के अवसर पर अभिषेक करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर, मारुति यज्ञ में श्रीफल चढाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मर्धाना मुवाडा गाँव में नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सिध्धपुर गाँव में यज्ञ में श्रीफल चढाते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

डांगरवा गाँव में आसीर्वाद पाठवते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मांडल मंदिर (दोनो मंदिर) में मंदिर के दस्तावेज के कागज प.पू. आचार्य महाराजश्री को श्री नरनारायणदेव देश ट्रस्ट में अर्पण करते हुए हरिभक्त ।

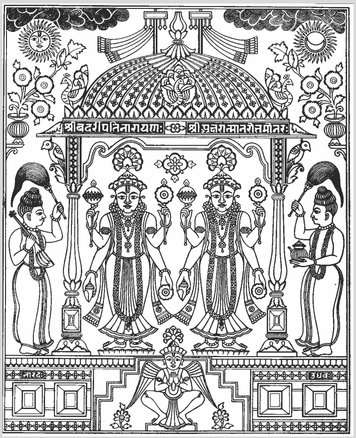

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १७८ ● मई-२०२२

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री,
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. पूजा करने वाला परिधान ०६

०४. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजचश्री के मुख से आशीर्वचन ०८

०५. ओला ११

०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १३

०७. भक्ति सुधा १५

०८. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

अपने सम्प्रदाय के आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने समैया करने की प्रथा प्रारम्भ किये है। और अनेक मंदिरो के लिये अलग-अलग त्योहारो की समैया करना निश्चित किये है। जिस में हजारो व्यक्ति भाग लेते है। जो आपस में सम्पर्क में आते है। और मिलकर सत्संग करते है। इस जीव को जैसा साथ मिलता है। वैसा उसमें गुण-दोष का विकास होता है। इस लिये यदि सात्विक सज्जन मनुष्य का साथ मिलने पर अपने अंदर सद्‌गुणो का विकास होता है। जो मोक्ष के तरफ अग्रसर करता है। यदि खराब लोगो की संगत मिलती है। तो व्यक्ति पतन के मार्ग पर चला जाता है। इससे वारम्बार जन्म-मृत्यु के चक्कर में बना रहता है। इस लिये भगवान के सम्बन्धित उत्सवो में भगवान के एकान्तिक भक्त तथा संत-पुरुषो का मिलना होता है। जिससे जीवन उर्ध्वगति को प्राप्त करता है। जीव स्वयं में शुद्ध-निर्मल और चैतन्य है। जैसे गंगा जल पवित्र होता है। यदि उसे अधिक गर्म कढाई के उपर डाले तो वह बाष्प बन कर उड जाता है। यदि उसी जल को फूल के पौधे पर छिडकने पर सुगंथित होकर मोती की तरह चमकने लगता है। किसी मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगा जल डाले तो वह सद्‌गति को प्राप्त होता है। यदि सर्प के मुख मे जाये तो वह बिष बनकर प्राणान्तेकर देता है। उसी प्रकार शुद्ध चैतन्य निर्मल जीवात्मा को जैसा साथ मिलता है। वैसे उसकी गती होती है। इसलिये समैया-उत्सव में आये मानव को अमरत्व प्रदान करता है। ऐसे मनुष्य का अवश्य समागम होता है। जिससे उसकी उर्ध्वगति प्राप्त होती है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अप्रैल-२०२२)

१० रामनवमी श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिन अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के अक्षरभवन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धर्मकुल के कुल देवता श्री हनुमानजी महाराज की जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित मारुतियज्ञ की आरती अपने करकमलो से किये।

१९ प.पू. बड़े महाराजश्री के ७८ वे प्रागट्योत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शन के लिये आये थे।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) डांगरवा गाँव में पाटोत्सव के अवसर पर पधरामणी।

२९ सापकडा श्री स्वामिनारायण मंदिर (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधरामणी।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुंन्द्रा पाटोत्सव के अवसर पर पधरामणी।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०२२)

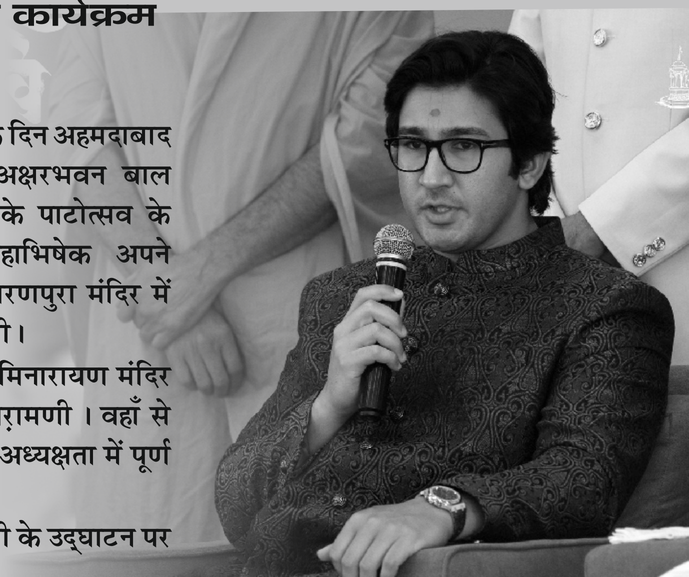

१० रामनवमी श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिन अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अक्षरभवन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये। नारणपुरा मंदिर में महापूजा के अवसर पर पधारमणी।

१३ से १९ अमेरिका के कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग सभा के अवसर पर पधरामणी। वहाँ से देवस्य का कानफेरेन्स आप की अध्यक्षता में पूर्ण हुआ।

२३ खोरजा (डाभी) प्रसादी की छत्री के उद्घाटन पर पधरामणी।

पूजा करने वाला परिधान

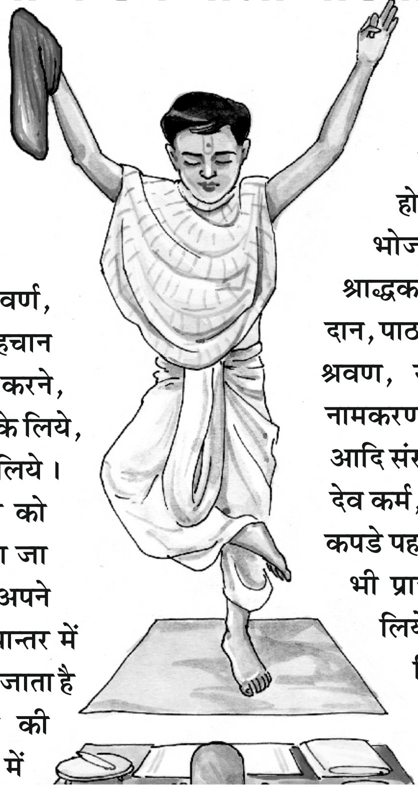

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने भारतीय संस्कृति की परम्परा में मनुष्य के परिधान-वस्त्रो का विज्ञान हमारे पूर्वजोने अति सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा संशोधन करके तैयार करके जैसे कार्य - प्रवृत्ति, देश, स्थान, काल, समय, क्रिया, सम्बन्ध, अवस्था, संस्कार, वर्ण, आश्रम, सम्प्रदाय, धर्म, दीक्षा, मंत्र पहचान के अनुसार उस अवसर को सफल करने, प्रोत्साहित करने के लिये, सिद्ध करने के लिये, सरल करने के लिये, प्राप्त करने के लिये । संकल्प में विघ्न करने वाले कारको को मात्र परिधान द्वारा विजय प्राप्त किया जा सकता है । इन्ही लक्ष्यो को देखकर अपने देश के परिधान बनाये गये है । समयान्तर में उसमें कभी-कभी परिवर्तन भी किया जाता है । लेकिन अपनी स्वदेशी वेशभूषा की सुंदरता-पवित्रता, मर्यादा को ध्यान में रखा जाता है । आज हम यहाँ पर पूजा और सत्कर्म के परिधान के विषय में अपने ऋषि-मुनियों के द्वारा प्रमाणित किये गये परिधान का वर्णन कर रहे है । जिस में विश्व के सभी धर्मो, सम्प्रदायो के सिद्धांत की कुछ समानता दिखाई देती है।

हम लोग जब प्रातः पूजा करते है तब धोती और खेश पहनकर करते है । क्योकि पूजा करते समय सिले वस्त्र नही पहनना चाहिए । ऐसा शास्त्रो में संकेत किया गया है । विना सिले वस्त्र पहनकर पूजा करके उसकी सफलता प्राप्त होती है । इससे एकाग्रता आती है । सत्कर्म में सिले वस्त्र से अनेक विक्षेप पैदा होता है । बिना सिले वाले वस्त्र पहनकर पूजा में सहायता तथा अच्छा वातावरण बनाता है । तथा आराध्य देव की प्रसन्नता में सहायक होता है । इसका अर्थ यह नही है सिले वस्त्र नही पहनना चाहिए । लेकिन जब देव कर्म, पितृकर्म, पूजा-अर्चन, महापूजा, होम हवन, आरती, भोजन के समय, भोजन कराते समय नित्य नैमितिक, श्राद्धकर्म, पितृकर्म, स्थानकर्म, यात्राकर्म, दान, पाठ-पठन, पुरश्चरण, कथा वाचन, कथा श्रवण, साष्टांग, उपवीत, लग्न अभिषेक, नामकरण, मुंडनकर्म, कर्णवेधन, जातकर्म आदि संस्कार नित्य नैमितिक किसी प्रकार का देव कर्म, योग ध्यान इत्यादि करते समय सीले कपडे पहनने से सफलता नही मिलती है । आज भी प्राचीन मंदिरो में पूजारी-दर्शनार्थी के लिये सिले कपडे पहन कर जाना प्रवेश निषेध होता है । विशेषकर दक्षिण भारत के मंदिरो में तथा द्वादश ज्योर्तिलिंग के मंदिर, जैन मंदिर में प्रवेश के समय कडक नियम दिखाई देता है।

आज भी हम देखते है कि छोटे-बड़े मंदिरो के पूजारी सिले वस्त्र पहनकर गर्भगृह में प्रवेश नही करते है । चाहे वह किसी धर्म परम्परा सम्प्रदाय के हो । ये वस्त्र सूती या उन से बना हो तो उसका प्रभाव अधिक होता है । अपने सम्प्रदाय के छोटे-बड़े हरि मंदिर या शिखरबद्ध मंदिर में पूजारी सीले वस्त्र नही पहनते है । अपने सम्प्रदाय के त्यागी विना सिले परिधान पहनते है । त्यागी को भगवान की भक्ति के अलावा समय को व्यर्थ न करे । ऐसी आज्ञा दी गई है । सिले वस्त्र सत्कर्म में अवरोध करते है । (श्वेताम्बरी) जैन साधु-साध्वी, वैरागी साधु, उदासी संत, शैव पंथी आदि साधु समाज में दिक्षा के समय प्रतिज्ञा कराई जाती है । सिले वस्त्र न पहने । भगवान श्रीराम चौदह वर्ष वन में रहे । उस

समय राजर्षि वस्त्रो का त्याग कर तपस्वी का वेश-भूषा धारण किये थे ।और् परमब्रह्म परमात्मा श्री घनश्याम महाराज अयोध्या से वन विचरण की शुरुआत किये । तब तपस्वी का परिधान धारण किये थे । बदरकिश्राम में तपस्या करते श्री नरनारायण भगवान वृक्षो को छाल से निर्मित वस्त्र धारण करके तपस्या कर रहे थे । भगवान शिव, हनुमानजी आदि सदैव तपस्वी वेश में रहते है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने संतो ने सीले वस्त्रो को न पहनने का वैज्ञानिक कारण दिये है । जब हम सत्कर्म करते है तब शरीर के प्रत्येक रोम-रोम से अद्‌भूत चेतना ऊर्जा बनती है । वह ऊर्जा और तथा आराध्य देव की चैतन्य शक्ति ऐश्वर्य शक्ति, परब्रह्म शक्ति, ब्रह्म शक्ति, का सम्बन्ध आत्मा-परमात्मा का सम्बन्ध बन जाता है। अपने सत्कर्म की ऊर्जा परमात्मा में कृष्णार्पण योग बन जाती है । यह प्रक्रिया साधक और साध्य के सम्बन्ध होने का उत्सव-महोत्सव का अवसर माना जाता है। यदि ऐसे सत्कर्म के समय हम सिले कपडे पहनते है तो आत्मा परमात्मा के अनुभव में विझोप पैदा करता है। तथा परब्रह्म के ऊर्जा के अखंड प्रवाह से शरीर के माध्यम से आत्मानुमति से मानव वंचित रह जाता है। इस प्रकार संचित की गई । ऐश्वर्य ऊर्जा शक्ति समाप्त हो जाती है । इस शक्ति को चारो तरफ बैठे राक्षस प्रवृत्ति वाले चोरी कर लेते है । अन्ततः साधक का फल दूर हो जाता है। धन, समय, शक्ति निष्फल हो जाती है। साधक को ज्ञात नही होता है।

साधक जब बताये गये सत्कर्म को करता है। तो उसके चारो तरफ एक ऊर्जा का आभा मंडल बनता है। उसे योग-समाधि वाला ही जान सकता है । शक्ति उस जगह पर युगो-युगो तक जीवित रहती है। इसी कारण से तीर्थस्तानो पर हजारो लाखो वर्ष बीत जाने के बाद भी साधक उसका अनुबव करते है । उसमें परब्रह्म शक्ति का स्पर्श का अनुभव करने में सीले वस्त्र बाधा उत्पन्न करते है।

सत्कर्म के समय तिथिवार, घडी, पल, नक्षत्र, योग, करण-स्थान के प्रभाव से वायु मंडल में स्थित ऊर्जा शक्ति का सीले वस्त्र पहनने से शरीर पर लाभ नही मिलता है। यह भी एक कारण होता है।

सतोगुणी वस्त्र सतोगुणी कर्म में किसी अंश तक प्रोत्साहित करता है । उसका प्रभाव भी होता है । सामने वाले के विचार शक्ति को बदल दैने की क्षमता परिधान में होती है।

यज्ञ-पूजा पाठ आदि में धोती-खेश आदि वस्त्र पहनने से लम्बे समय तक ासधना में बैठ सकते है। जब कि सीले तथा चुस्त कपडे में पूजा-पाठ में एकाग्रता नही आती है । तथा किये गये सत्कर्म का फल नही मिलता है।

श्रीजी महाराज जब भोजन करते समय पीताम्बर धारण करते तथा संतो की पंगत में परोसते समय भी पीताम्बर वस्त्र धारण करते थे। आज भी कई कर्मकांडी भूदेव भोजन करते समय पीताम्बर पहननते है। हमे भी भगवान की पूजा-अर्चना यज्ञ आदि में बिना सिले वस्त्र को पहनने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।

श्री नरनारायणदेव की ध्वजा के यजमानश्री

प.भ. जसुबेन परबत शियाणी - मिरजापुर-कच्छ
प.भ. मुलजीभाई करशन शियाणी तथा मेघबाई - भुज-कच्छ
प.भ. हीरजी नारण वेकरीया - कुंदनपर-कच्छ
प.भ. हरीश शिवजी पादरा - मदनपुर-कच्छ
प.भ. रामजीभाई गोपालभाई दबासिया - मानकुवा-कच्छ
प.भ. कानजी नारण प्रेमजी हिराणी - मानकुवा-कच्छ
प.भ. नारण प्रेमजी हिराणी - मानकुवा-कच्छ
प.भ. दिप्त देवराज पिंडोरिया - सुखपर-कच्छ
प.भ. चेतना देवराज पिंडोरिया - सुखपर-कच्छ
प.भ. पटेल घनश्यामभाई बबाभाई नाथाभाई - उनावा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

जेतलपुरधाम १९६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २५-०३-२०२२ : हम सभी भाग्यशाली है कि देव के इस प्रसादी सभा मंडप में बैठे है। गोरधनभाई (गोरधनभाई रणछोडभाई पटेल, यजमानश्री) आप तथा आप के परिवार के उपर भगवान ने कृपा किये है कि आप आज के प्रसंग का दिव्य लाभ ले रहे है। संतो के मुख से हम सुनते रहे है कि देव महाप्रतापी है। बेटा देते है। सब कुछ देते है। लेकिन भगवान ने वचनामृत में कुछ अलग ही कहे है। हम खुश होने पर लडके औरत सभी को रास्ते पर ला देते है। यह भगवान के ही वाक्य है न ? लेकिन वास्तविकता यह है कि भगवान ऐसा नही करते है। हम लोग भगवान के आश्रित है। आश्रित के लिये भगवान का वचन है कि आसरा रखेगे तो हंमेशा सुखी रहेगे। वह कभी भी दुखी नही होगा। आश्रित शब्द वजनदार है। लेकिन हम प्रतिदिन सुनते आ रहे है। इस लिये इसका वजन कम आँकते है। आश्रय किये कहते है ? सप्ताह तक मंथन करने पर भी इसका उत्तर (सोल्यूसन) नही मिलेगा। यह कठिन है ?

देव के पास अपेक्षा लेकर नही जाना चाहिए। चारपाई में से उठने पर ही। साँस लिया तब से देव का दर्शन हुआ। यह भगवान की कम कृपा है ? हमने कई बार सुना है कि आदमी के हाथ में सामान होने पर भी भूल जाता है। चाभी भूल जाता है। मोबाईल भूल जाता है। उसे वापस लेने आता है। क्योकि उसके बिना नही पायेगा। एक आदमी तो मंदिर आये थे। और अपने घर वालो को भूल गये। सत्य है ! बाद में क्या हुआ उसे जाने ! हम करते है कि हमे इतने बजे उठते है। कौन उठाता है ? अपनी क्षमता तो नही है। कोई एक श्वास के बाद दूसरी श्वास देता है। तभी हम जागते है। अपने धर्म में रहे तो लोग श्वास लेना भी भूल जाये। यह श्वास हमे देव दे रहे है। देव ही हमे जगाते है। तभी हम लोग यहाँ पर देव का दर्शन कर रहे है। इस कर्ज से मानव कभी मुक्त नही हो सकता है। इससे बड़ा कोई चमत्कार भी नही है। मस्त लोगो की बात अलग है। संसार में बहुत कुछ चलता रहता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि डाल का टूटना निश्चित होता है लेकिन उसी समय उस डाल पर कौवा बैठ जाता है। हम देखते भी है। लेकिन महाराज ने स्पष्ट बताया है। हम पुत्र और धन नही देते है। हमे कल्याण करने आता है। ऐसा ही वचनामृत में आता है न ? युवक पढते होगे तो ज्ञात होगा। शेष बडे-बुर्जुग लोग (गर्दन) सिर हिला दे रहे है।

बात यह है कि प्रत्येक श्वास को देने वाला इस सिंहासन पर बैठे है। उनका सानिध्य हम सभी को मिला है। महाराज जिसकी स्वयं स्थापना किये है। इस लिये मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ। भगवान की दया है कि इस मूर्ति का स्पर्श करने का अवसर मुझे मिल रहा है। यह स्पर्श आप लोगो के द्वारा कर रहा हूँ। नरनारायणदेव देश का परिवार ये हमारा परिवार है। इस परिवार के लिये सदैव ऐसा विचार आता है कि बस.... सुखी रहे। जो कभी माँगते नही है। लेकिन कैसे है ? इस प्रकार जाये। तब जन के पास जाते है तो यह नही पूछते सब ठीक है ? भगवान के पास इस तरह क्यों नही जा सकते है ? सीधे रुप में कहे तो भगवान अपने बस में नही है। यदि मेरा इतना पूरा हो जाये तो आप के लिये इतना कर दूँगा। नारियल चढा देगे। संसार इसी तरह से चल रहा है। वास्तव में हम लोगो को

महाराजने जो परम्परा दी है। उसका प्रभाव पर्व अभी चालू है। इस लिये कई लोग आकर कहते है। अब आनंद नही आ रहा है। ''कौन कहता है कि समाप्त हो गया ? ब्रह्मानंद के प्रिय दररोज दिवाली है।''

यहाँ पर बुजुर्ग लोग अधिक बैठे दिखाई दे रहे है। बड़ो का दायित्व इतना ही नही है कि परिवार में संस्कार का सिंचन करे। उन्हे संस्कार वाला वातावरण देना चाहिए। मानवतापूर्ण संस्कार देना है। शिक्षापत्री के २१२ वे श्लोक में कही भी ऐसा नही लिखा है कि दिवार के सामने बैठकर ध्यान करे। लिखा है ? लिखा है तो बताये। हिंसा नही करे। वहाँ से प्रारम्भ है। मनुष्य बने यही मुख्य धर्म है। मैं विश्वास रखता हूँ कि मनुष्य बनना ही प्रारम्भ है। हिंसा कई प्रकार की होती है। किसी व्यक्ति के जीवन में मानसकि मिलावट करना भी हिंसा से अधिक होता है। हमारा मानना है कि सर्व प्रथम मनुष्य बने। इसके पश्चात सत्संगी बने।

ये मोबाइल, मिडिया अत्याधिक रसप्रद है। आप तो जानते ही होगे। गुड मोर्निंग..... गुड इवनिंग.... जय स्वामिनारायण.... जय स्वामिनारायण मुझे तो ब्लोक कर देना पडा। भगवान का चित्र भेजते है। यह हमारे पास है। भगवान अमेरिका में मैं सत्संग विचरण कर रहे थे। जैमिन नाम का २५ वर्ष का युवक उसके मोबाईल में किसी ने भगवान का फोटो भेजा था। वह सामने वाले से बोला ''हमारे पास भगवान है। यदि तुम मोबाईल में भगवान को साक्षात् मानता है तो उसे **Delet** करे दे। प्रत्यक्ष को **Delet** कैसे करे ? इस तरह कितने फोटो एकत्र हो जायेगे। कुछ लोगो को मनोवैज्ञानिक दबाव आ जाता है। कोई छूट तो नही गया ? वह पुनः अंगुली से टटोलता है। यह सामान्य प्रसंगोचित बात कहे है। व्यक्ति विशेष पर टिप्पणी नही है। अपने नई पीढी को आधार मिले। इस उद्देश्य से पर्व में **V.R.S. (Vertual Reality Show)** तथा ड्रोन के माध्मय से टेक्नोलाजी का उपयोग किया गया था। और गाँव के लोग अपना कार्यक्रम देख सके। इस उद्देश्य से आज भी **GTPL** और **U-Tube** का उपयोग किये है। हमें **TRP** नही देखना है। **TRP** इस सिंहासन पर विराजमान है। ये जो दे सर्वाधिक है। बात यह थी। भगवान ने जो हम लोगो को जो सिद्धांत परम्परा दिये है। उसकी सुरक्षा में जो कमी होगी तो सब शून्य हो जायेगा। यह हमारा मनाना है। देव का दर्शन मिले। यह बडी भाग्य है। भगवान की अपने उपर कितनी करुणा है। कितनी सुविधा दिये है। सडक से जा रहे हो तो बगल से दर्शन करके अपने मार्ग पर आसक्ते है।

पुनः गंगा स्नान का दृष्टांत देकर कहे कि जिस प्रकार पाय से मुक्त होने के लिये। गंगा में स्नान के बाद गंगा को हृदय में रखकर घर आते है। उसी प्रकार देव का दर्शन करके देव को हृदय में रखकर घर पर आते है। गुणबुद्धि होनी चाहिए। नकारात्मकता स्वीकार करना सरल है। संसार में जो कलह-झगडा चल रहा है ।उसे हमे क्या लेना है। हमे तो दो समय को रोटी मिल रही है न ! इस में जो अच्छा लगे। उसे स्वीकार करे हमे ज्ञान नही किसमें क्या गुण है ? हम कोई जज नही है। यदि हम किसी वस्तु की सरलता से स्वीकार कर ले तो समस्या का हल हो जाता है। अभी पर्व था। या पाटोत्सव आता है। तो कुछ लोग हम पर कटाक्ष मारते है। धोती तथा खेश को खीचते है। इस समय व्यवस्था वाले लोग ही अव्यवस्था फैलाते है। एक आदमी तो डंडा लेकर आ गया। मैने कहा भाई दया करके डंडा हटा दे। आप कभी हमे ही डंडे से मार देगे। ऐसी व्यवस्था की हमे आवश्यकता नही है। हरिभक्तो को ज्ञात है। किस समय विवेक का प्रयोग करना अनिवार्य है। वास्तव में राज्य कक्षास्तर और केन्द्र स्वर के मंत्रियो ने ध्यान दिया है। पर्व के समय पोडियम के उपर से कहे थे। श्री नरनारायणदेव कालुपुर मंदिर के अर्न्तगत जो मंदिर है। उस हरिभक्तो में अनुशासन है। ऐसा कही नही दिखाई देता है। हमारे पैर के उपर किसी का पैर आजाने पर सहजता से स्वीकार कर लेता हूँ। महाराजजी का कहना है कि सत्संग की भीड में रहना है तो। सरल हो कर रहे। इस समय कोई कुछ कहे तो जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया आती है। जो देगे। वही मिलेगा। अच्छी भाषा देने पर अच्छी भाषा मिलेगी। एक गाली देने पर दो मिलेगी। ऐसा होता है कि नही ?

अभी महिजडा के भक्तो ने मंदिर का दस्तावेजी कागज हम को दिये। और बोले कि आप मे से कोई कालुपुर मंदिर जाने वाला हो तो मंदिर द्वारा कागज चैरीटी कमिश्नर मे जमा करा देगे। इन भक्तो से दूसरे लोगो को प्रेरणा लेना चाहिए। मुझे कोई मंदिर नही

मिलता है । हम देव के है । देव ही हमारे ट्रस्टी है । इससे भविष्य सुरक्षित है । यह महत्वपूर्ण है । सुरक्षित होने पर सिंहासन में दूसरे का फोटो कभी नही आयेगा । आप के पहले वाले बुजुर्ग लोग आठ आना, चार आना, पाँच पैसा एक मुठ्ठी भर अनाज दिये होगे तो वह बेकार नही गया होगा । इसके पीछे कोई शक्ति है । दुनिया है जो आप को सुरक्षा दे सकती है । आप कर्जदार न बने तथा देव की क्षति भी न हो इस बात पर ध्यान देना है । इसलिये मैं एकत्रीकरण में विश्वास रखता हूँ । शेष ये कागज-फाईल तो हमारे लिये काँटे का मुकुट ही है । चुनाव आने पर व्यवस्था हमे ही करना है । गंगा उल्टी बहती है । प्रबन्ध आप को करना है । बैक का खाता आप के गाँव में है । हम तो हस्ताक्षर वाला बैंक चेक दे देते है । रिर्टन फाईल हम करते है । इतनी जिज्मेदारी कौन लेगा ? ऐसा संसार कही नही है । कोई किसी कम्पनी की डिलीरशिप लेता है तो करार करता है । कुछ अंश हमे भी चाहिए । हम तो लेने की जगह पर देते है । पर्व में किसी से कुछ माँगे थे । ? स्वेच्छा से आप ने जो लिखाया । वह आप को देकर । सभीने आनंद लिया । कोई शिकायत नही आयी । आप अपने मकान, दुकान, खेत के कागज क्लीयर रखते है । तो क्या देव का नही रखना ? बस इतना ही है । देव का देव को देकर अपना ही लाभ है । पब्लिक ट्रस्ट एक्ट १९५० का प्रभाव हो । उस विषय पर हम नही जायेगे । आराम । देव के नाम की पाङ्टिका लगाने से देव का नही हो जाता है । अभी हम एक सुप्रीम कोर्ट के काउन्सिलर के पास बैठे थे । प्रंसगोचित बात पर हमने कहा मैं अपने घर के देव के सिंहासन के उपर कालुपुर नरनारायणदेव के अन्तर्गत वाला पट्टिकालगा दे । और रसीद छपा दे । तो देव के बदले में षडयत्र की धारा लग जायेगी । इस लिये कागज क्लीयर होना चाहिए । इसमें तो चोरी कही पर नही है । खिस्सा में नही डालते है । द्वादशी के दिन राजभोग आरती के बाद भक्त लोग ही दान पेटीका खोलते है । वे लोग अपने पास चाभी रखते है । चाभी मंदिर में नही रखी जाती है । यहाँ पर यही प्रणाली है । इतनी पारदर्शिता कही नही है । बाकी मुझसे एक आदमी ने कहाँ मेरा इसमें क्या है ? मुझे क्या ? इसी पर दुनिया चलती है ।

देव का बनकर रहे । मेरा या किसी के बनने की आवश्यता नही है । आप देव के रहेगे तो हम स्वतः आप के है ? आप सभी भाग्यशाली है कि संत-भक्ति सभी मिलकर इस परिसर में वर्षो से धुन और भजन कर रहे है । रमेशभाई (रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल पर्व के मुख्य यजमानश्री जो अभी उमियाधाम ट्रस्ट के उप प्रमुख नियुक्त हुए है । धन्यवाद, मैं तो दर्शन करके आ गया हूँ ।

द्रष्ट्वा शिवालयादीनि देवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्यं तानि तद्देवदर्शनं कार्यमादरात् ॥

शिवालय आदि देव के मंदिर आये, उनका दर्शन करे । लेकिन जो हमे मिला है । उसके लिये ५६ की छाती भी छोटी है । इतना तो गर्व होना चाहिए । अमीर तो भिखारी भी हो जाता है । लेकिन हम लोग तो रईस है । इस सिंहासन पर देव बैठे है । यही नरनारायणदेव हम सभी को रईस बनाये है । ये देव आप लोगो को सुखी करे । इसी प्रार्थना के साथ विराम करता हूँ ।

"पर्व" महामहोत्सव के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से 'श्री स्वामिनारायण मासिक' के लिये आजीवन सदस्यो को सौजन्य रुप में भेट देने वाले हरिभक्त

प.भ. कांतिभाई केशरा भूडिया परिवार - फोटडी-कच्छ
प.भ. मधुभाई गोरधनभाई लाठिया परिवार - अहमदाबाद
प.भ. धनजीभाई हिरजीभाई हिराणी परिवार - भुज-कच्छ
प.भ. प्रविणभाई टी. पटेल परिवार - बडुवाला
प.भ. शकरीबेन पटेल परिवार - राजपुर-कडी
प.भ. भीखुभाई जेठूभाई मोरी परिवार - कालीयाणा
प.भ. चंदूभाई पटेल परिवार - राजपुर-कडी
प.भ. जयंतीभाई रामदास पटेल परिवार - वडवाला
प.भ. बाबरिया शांतिलालभाई ओधवजीभाई परिवार - मोरबी
प.भ. पंकितभाई पटेल परिवार - जेतलपुर
प.भ. चिकाभाई पी. खरसाणी परिवार - अहमदाबाद
प.भ. अरविंदभाई पी. ठक्कर - शीतल मोटर्स-अहमदाबाद
प.भ. डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया परिवार - कालीयाणा
प.भ. निकुंज मणीभाई पटेल परिवार - करजीसणवाले
प.भ. देवेन्द्रभाई एन. डोडिया - बोपल

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

ओला

संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटा में
- अमहादाबाद हवाई अड्डा से ४५ मिनट

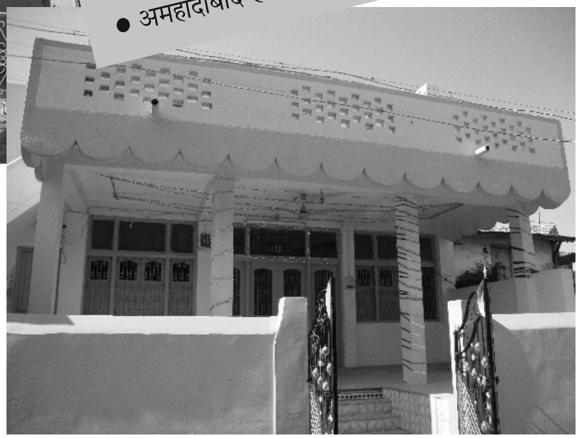

यहाँ पर हरिमंदिर है। यहाँ पर हिंडोले पर झूलती श्रीहरि की पट मूर्ति प्रतिष्ठित है। यहाँ पर वरगद का पेड प्रसादी का है । जहाँ पर श्रीहरिने सभा को सम्बोधित किये थे । यह बरगद गाँव के पूरब दिशा में स्थित है । गाँव के मध्य में एक छत्री है। वहाँ पर हनुमानजी के प्रतिष्ठा है। श्रीहरिजी जब ओला में आये। तभी रतनबाई श्रीहरि का स्वागत की थी। रतनबाई का घर प्रसादी का है। इनका घर मंदिर के बगल में स्थित है। गाँव के बाहर पूरव दिशा में कुवाँ तथा प्रसादी का तालाब है। उस कुवाँ पर तथा तालाब में श्रीहरि कई बार स्नान किये थे ।वर्तमान समय में उस कुआँ का पानी मृदु है।

ओला में श्रीहरि : एक बार श्रीहरि दंढाव्य में विचरण कर रहे थे । वे संत, ब्रह्मचारीयो, पार्षदो और हरिभक्तो के साथ झूलासण से ओला गाँव में आये थे। इस अवसर का ''श्री घनश्याम लीलामृतसागर'' ग्रन्थ के ३० तरंग ६९ में निम्नलिखित रुप में वर्णन किया गया है।

त्यांथी गाम ओळेग्या श्याम ॥
भक्त राजी तया अभिराम ॥
नरोत्तमजी सिधरदास ॥
रत्नबाये सेवा करी तास ॥१२॥
पछे त्यां थकी श्री नरवीर ॥
धमासणे गाम गया धीर ॥

(''श्री घनश्याम लीलामृत सागर'' उ.तरंग ६९)

एक समय पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण संतो-पार्षदो तथा हरिभक्तो सहित दंढाव्य देश में विचरण करते पानसर गाँव से ओला गाँव में गये। श्रीहरि हमारे गाँव में आ रहे है। ऐसा जानकर श्रीहरि के प्रेमी भक्त वक्ताभाई, अविचलभाई आदि भक्तगण गाँव के मार्ग को ध्वजा तथा तोरण से सजा रखे थे। उस गाँव की श्रेष्ठ भक्त रतनबाई भगवान श्रीहरि का अक्षत, चंदन, कुमकुम तथा पुष्पहार से स्वागत की थी। तथा सभी भक्त गण श्रीहरि महाप्रभु को साष्टांग दंडवत करते प्रणाम किये । इसके बाद भगवान श्रीहरि संतो, पार्षदो तथा हरिभक्तो के साथ रतनबा के घर पधारे थे।

रतनबा के घर श्रीहरि महाप्रभु की काकुभाई, काशीदास विठ्ठलभाई, जीवणभाई तथा शोभण सुथार आदि हरिभक्तोने प्रेम से सेवा किये थे।

करजीसण से श्रीहरि का ओला में आगमन : अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण किसी समय वर्षा काल में करजीसण गाँव से ओला गाँव की तरफ प्रस्थान किये । श्री गोविंदभाी अपने गाडी में श्रीहरि तथा मुकुंदवर्णी को बैठाकर गाडी स्वयं हाँक रहे थे । गाडी आधे रास्ते में पहुँची, मार्ग में रेत होने के कारण बैल चल नही पा रहे थे। श्रीहरि गाडी में से उतरकर मुकुंदवर्णी के साथ रात्रि के समय ओला गाँव में आये। रतनबा के आँगन में खडे हो गये। कुछ समय के बाद मुकुंदवर्णी उस घर के दरवाजे को

अपने पैर से खटखटाने लगे । और रतनबा को आवाज देकर बुलाने लगे । हे निष्पापपी भक्त रतनबा । आप दरवाजा खोले । उढे जल्दी से दीपक जलाये । क्योंकि पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण महाप्रभु कीचड युक्त पैर होकर आपके आँगन में खडे है । इस प्रकार वर्णी के आवाज सुनकर रतनबा तत्काल जाग गयी । दीपक जलाकर दरवाजा खोली । घर को स्वच्छ करके महाराज तथा मुकुंदवर्णी के पैरो को धोने के लिये शुद्द जल दी । श्रीहरि पैर धोकर घर में आये । तथा सुशोभित आसन पर बिराजमान हुए । और मुकुंद ब्रह्मचारी स्नान करके श्रीहरि के लिये भोजन बनाने लगे । भोजन तैयार हो जाने के बाद श्रीहरि भोजन करके अपने आसन पर बिराजमान हुए ।

श्रीहरि के प्रिय रतनबा को श्रीहरि की कृपा से दिव्य दृष्टि से चिदाकाश का दर्शन हुआ । उस चिदाकाश में माया से दिव्य गोलोक धाम देखी । उस धाम में स्थित तेजपुंज में रत्न जडित सिंहासन के उपर विराजमान भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु का रतनबाने दर्शन किया । उस महाप्रभु के बाये तरफ सुंदर भृकुटि वाली राधिका युक्त दिव्य अलौकिक मूर्ति श्री कृष्ण का दर्शन कर रहे थे । इस प्रकार श्रीहरि के दाहिने तफ दिव्य देहधारी भक्तिमाता से युक्त धर्मदेव दिखाई दे हे थे । इस प्रकार श्रीहरि का दर्शन करके रतनबा समाधि से उठकर प्रेम से प्रार्थना करने लगी ।

हे कल्याणकारी प्रभु ! हे हरि ! अलग-अलग रहे । आप अपनी इच्छा से परस्पर तत्वो से मिलकर विराट पुरुष के विशाल शरीर को प्रगट करते है । ऐसी इच्छा वाले आप को में प्रणाम करता हूँ । हे भगवन ! आप कलियुग में प्रगट होकर अधर्म का नाश करके धर्मका प्रसार करके अनेक जीवात्मा का कल्याण कर रहे है ? लोगो का मनोरथ पूर्ण करके अपने रुप का दर्शन देते है । इस जगत के कर्ता-धर्ता महाप्रभु में आप को बार-बार प्रणाम करता हूँ । इस प्रकरा रतनबा की स्तुति सुनकर भगवान अति प्रसन्न हुए । उस समय किसी मानवका रुदन सुनकर श्रीहरि रतनबा से पूछे कि । हे रतनबा यह कौन रो रहा है ? हे हरि ! हमारे परिवार में अभी एक वृद्ध मृत्यु को प्राप्त हुआ है । उसकी पत्नी रुदन कर रही है । भगवान श्रीहरि रतनबा की बात सुनकर रतनबा से बोले । हे अल्प बुद्धिवाली रतनबा ! आप के घर सूतक है ऐसा क्यो नही बताया ? आप के सूतक वाले अन्न को ग्रहण किये है । आप के अन्न का हम दोनो लोग प्रायश्चित करेगे ।

रतनबाने श्रीहरि से बोली कि है प्रभु ! सोना के स्पर्श जल के द्वारा सूतक की क्षति हो जाती है । अर्थात् वह व्यक्ति शुद्ध हो जाता है । तो आप के नाम उच्चारण से शुद्ध मानव को सूतक का क्या प्रभाव पडेगा । तो आप को मेरा शूतक कैसे स्पर्श कर सकता है ? फिर भी हम दोनो प्रायश्चित करेगे । धर्मपुष्टि के लिये यह आप के शब्द योग्य ही है । इस प्रकार श्रीहरि हास्य विनोद के साथ उठकर रात्रि में सो गये । ब्रह्ममूहूर्त में उठकर स्नान क्रिया आदि करके पूजा पाठ करके श्रीरि तथा मुकुंदवर्णी रतनबा की गाडी में बैठकर अडालज होकर गाँवो को छोडते हुए पंचाल देश की तरफ गये ।

अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ओला गाँव में जाकर अपने आश्रितो को धर्म युक्त ज्ञान देकर भक्तो की सेवा स्वीकार करते सभी का मनोरथ पूर्ण करके । सभी को मोक्ष का भागी बनाकर । ओला गाँव में श्रीहरि प्रेमी भक्तो की नामावलि स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्तचिंतामणी'' ग्रंथ प्रकरण ११९ में बताये है ।

कणबी भक्त गंगादास कहीये,
नरोत्तम वासणकी कहीये ॥९॥
भक्त ठाकुरजीने काशीदास,
शीधरदासनो ओलामां वास ॥
रुडां भक्त छे बाई रतन,
एह रहे ओले हरिजन ॥१०॥

इस प्रकार ओला गाँव की भूमि को श्रीहरिने अपनेचरणो से पवित्र किये । उसी प्रकार संत, ब्रह्मचारी और पार्षद के चरणरज से अत्यंत प्रभाव शाली हुई ।

धर्मकुल के प्रति अद्भूत निष्ठा के उदाहरण

श्री नरनारायणदेव के प्रत्येक संत-हरिभक्त में श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के प्रति निष्ठा हृदय में है । शीघ्र ही शीघ्र चैत्रवद-३ ता. १९-४-२०२२ दिन मंगलवार को अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ७८ वाँ प्रागट्योत्सव के अवसर पर मेहसाना शहर के व्यवसायी डॉ. नरेन्द्रभाई भावसार (उ. ५८) के रग रग में धर्मकुल के प्रति निष्ठा, प्रेम, लगाव भरा है । उन्होने प्रतिज्ञा करके मेहसाना से सडक मार्ग द्वारा सायकिल चलाकर प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन किये । वह लगातार ७८ कि.मी. लगातार सायकिल चलाकर श्री स्वामिनारायण म्युजियम श्री नरनारायणदेव और प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन किये । तथा धन्य हुए । ऐसे विरले ही हरिभक्तो को ।

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री यज्ञ पूजन की सूची फरवरी-२०२२

दि. ०३-०२-२०२२ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल कालुपुर मंदिर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि

फरवरी-२०२२

रु. ६,६६,६६६-६६ श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल वर्त प.भ. संदीपभाई भरतभाई शेठ - अहमदाबाद

रु. ५,००,०००/- प.भ. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट तथा अ.नि. भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट - अहमदाबाद

रु. १,००,०००/- प.भ. पंकजभाई पटेल, धर्मिष्ठाबेन पटेल, अरविंदभाी पटेल - अहमदाबाद

रु. १,००,०००/- प.ब. डाह्याभाई नारणदास पटेल - माणसावाले - वर्त. थलतेज-अहमदाबाद

रु. ५०,०००/- अ.नि.प.भ. नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्ल तथा अ.नि. प.भ. ईश्वरलालभाई लाभशंकरभाई पंड्या शिष्यो की तरफ से वर्त. प.भ. अशोकभाई एल. दवे, हार्दिक दवे, भारतीबेन दवे, प्रीतिबेन दवे, भूमिबेन दवे - अहमदाबाद।

मार्च-२०२२

रु. १,११,१११/- प.भ. रामदास बापा परिवार वर्त. भाविक संजयभाई पटेल, फेनिल मयूरभाई पटेल, जीगरभाई विक्रमभाई पटेल, नीलकंठ लैण्डस्केप एसोसिएट - उनावा - गांधीनगर

रु. ५१,०००/- प.भ. जगदीशभाई चिमनलाल टेल - चि. पौत्र विशन के जन्म दिन पर - वर्त. बिन्देश जगदीशभाई पटेल - गांधीनगर

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

फरवरी-२०२२

दि. १९-०२-२०२२ प.भ.श्री निलेष तथा पारुल पटेल - न्यूजर्सी (अमेरिका)
दि. २२-०२-२०२२ प.भ.श्री अल्काबेन जगदीशभाई पटेल - राजपुरवाला - वर्त. राणीप
दि. २६-०२-२०२२ (प्रातः) प.भ.श्री राजुभाई सनाभाई पटेल (अमेरिका-झूंडालवाले)
दि. २६-०२-२०२२ (११ बजे) प.भ.श्री पूजा समीर कानुभा (अमेरिका)

मार्च-२०२२

दि. ०३-०३-२०२२ अ.नि. प.भ.श्री जशुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट तथा अ.नि. भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट परिवार - नारणपुरा
दि. ०६-०३-२०२२ (प्रातः) प.भ.श्री अंकुश वीरजीभाई राधवाणी, प.भ.श्री कानजीभाई भीमजीभाई राधवाणी परिवार - कच्छ-भुज
दि. ०६-०३-२०२२ (११ बजे) प.भ.श्री प्रीति प्रहलादभाई राघवाणी परिवार
दि. ०६-०३-२०२२ (११ बजे) प.भ.श्री नवीनभाई घनश्यामभाई पटेल - राजपुरवाले
दि. ०६-०३-२०२२ (शायं) प.भ.श्री अल्काबेन जगदीशभाई पटेल - अमेरिका - राजपुरवाले - राणीप
दि. ०७-०३-२०२२ अ.नि. प.भ.श्री नटवरलाल गिरधरलाल पटेल - करजीसणवाले - अमेरिका वर्त. नितेष तथा खुश्बु तथा रसिकभाई पटेल
दि. ०७-०३-२०२२ (११ बजे) प.भ.श्री डॉ. गंगारामभाई त्रिभोवनभाई पटेल - मेमनगर
दि. ०८-०३-२०२२ प.भ.श्री वनिता मनजी हिराणी के जन्म दिन पर - अमेरिका
दि. १९-०३-२०२२ प.भ.श्री मेघा निलेषकुमार पटेल, सुभद्राबेन अरविंदभाई पटेल - अमेरिका -वर्त. मनिषभाई अरविंदभाई
दि. २०-०३-२०२२ (दोपहर) प.भ.श्री दिलीपभाई केशवलाल पटेल - अमेरिका
दि. २३-०३-२०२२ प.भ.श्री ललितभाई घनश्यामभाई सोनगरा (नवा ईसनपुर - भक्तिनगर)
दि. २५-०३-२०२२ प.भ.श्री सत्यम हरेन्द्रकुमार दवे - पर्थ आस्ट्रेलिया - ह. दिपीकाबेन हरेन्द्रकुमार दवे

अप्रैल-२०२२

दि. ०२-०४-२०२२ प.भ.श्री हरेशभाई ओधवजीभाई परमार, अ.नि. ओधवजीभाई अरजणभाई की याद में वर्त. शारदाबेन ओधवजी परमार - गांधीनगर
दि. ०३-०४-२०२२ प.भ.श्री अक्षत दलसुखभाई देवाणी - बोडकदेव
दि. ०३-०४-२०२२ (११ बजे) प.भ.श्री पुष्पाबेन अरुणभाई पटेल - नेहरुनगर
दि. ०५-०४-२०२२ प.भ.श्री निकुलभाई डाह्याभाई चौधरी - बालवा - वर्त. अमेरिका
दि. १७-०४-२०२२ प.भ.श्री नयनकुमार बचुभाई पटेल - आनंदपुरवाले - सोलाट
दि. १९-०४-२०२२ प.पू. बड़े महाराजश्री के ७८ वे प्रागट्योत्सव दिन पर समूह महापूजा
दि. २३-०४-२०२२ प.भ.श्री ऋ,कि जयेशभाई गज्जर तथा मेघाभाई जयेशभाई गज्जर - नारणपुरा-अहमदाबाद
दि. २४-०४-२०२२ प.भ.श्री मानसी केतनभाई महेता - सीडनी-ओस्ट्रेलिया
दि. २७-०४-२०२२ प.भ.श्री वर्षाबेन चंद्रवदनभाई पटेल - राणीप - वर्त अमेरिका
दि. २८-०४-२०२२ प.भ.श्री भरतभाई प्रहलादभाई पटेल तता रविन्द्रभाई प्रहलादभाई पटेल - राणीप - राजपुरवाले

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) “दर्शन करते समय भगवान को धन्वयाद ज्ञापित करना”

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग मंदिर में दर्शन के लिये जाते है । तो किस लिये जाते है ? क्योकि हमारा मन शांत होता है । इस लिये दर्शन करते है । सही बात है । लेकिन एक बात हमेशा मान लेना चाहिए कि जब भी भगवान का दर्शन करे । तब-तब भगवान का आभार अवश्य मान लेना चाहिए । जब आप सोचने बैठेगे । तो पता चलेगा कि हमारे जीवन में कैसे कैसे संकट आये है । और किस परिस्थिति में से भगवान ने बचा लिया है । हजारो दुख तो ऐसे है । जिसे महाराज हमारे पास आने नही दिये है । इस लिये प्रतिदिन दर्शन करते समय उनका धन्यवाद मानना चाहिए । हम भगवान को देखकर दर्शनक रते है कि भगवान आज का कैसा वस्त्र धारण किये है । फूल का हार कैसा है । इन सभी श्रृंगार का दर्शन करना आवश्यक है । इससे भी अपना कल्याण हो जाता है । जब भगवान हमारे जीवन में भक्ति करने की सुगमता दे । तो जीवन में अनुकुलता आ जाती है । इसे भगवान की कृपा कहते है । और अपने अंदर से भगवत प्रेम जागृत हो जब समझ ले कि भगवान की विशेष कृपा है । इसके लिये भगवान को बारम्बार धन्यवाद देना चाहिए । तो इससे क्या होता है ? हमारे अन्दर अच्छे विचार आते है । सद्‌बुद्धि आती है । सतकार्य करने की शक्ति मिलती है । यह समझ में आता है कि हम अच्छे कार्य कैसे कर सकते है । ऐसी मानसिक समझ आती है । तथा अच्छे कार्यो के पीछे कैसा उद्देश्य होना चाहिए । उसका हमें ज्ञान होता है । आज कल अच्छा कार्य करना अति सरल हो गया है । किसी को भोजन कराना, वस्त्र देना, दवा देना, अपनी शक्ति के अनुसार लोग करते है । लेकिन इसमें से ९०% अपनी यश (वाहवाही) के लिये करते है । हमने इतना कार्य किया । ये सब बातो को प्रचालित करते है ।आप से अच्छा कोई व्यक्ति करे तो आप खुश नही होते है । इससे व्यक्ति के अंदर ईर्ष्या आ जाती है । दूसरे का सुख देखकर लोग सुखी नही होते है । ऐसा नही होना चाहिए । यह सब समझने की शक्ति आती है । यह सब सत शास्त्रो में वर्षो पूर्व लिखा जा चुका है । उसका हम लोग श्रवण भी करते है । तथा पढते भी है । हमे अपना दुर्गुण दूर करना चाहिए । यह भी शास्त्र में वर्णित है । तो ध्यान देना चाहिए कि इसमे कुछ परिवर्तन आया कि नही । कि हम अभी उसी जगह पर है । अभी सुविधाये बढ गई है । घर, गाडी, बंगला सब कुछ अधिक हो गया है । तो सुख भी अधिक होना चाहिए । अपने पूर्वजो के पास इतनी सुविधा नही थी । फिर भी उनके चेहरे पर संतोष और तृप्ति की लहर थी । सोचने वाली बात यह है कि लोगो के पास जो सुख था । ये अपने पास है । पहले इतने विद्यालय नही ते । इतने शिक्षक भी नही थे । अभी कितनी अच्छी सुविधा है । तो भी बच्चो को अच्छे संस्कार देने का प्रयास करना पडता है । मंदिर में भी बाल शिबिर, बालिका शिबिर रखना पडता है । तो भी कुछ लोगो को ही संस्कार दिया जा सकता है । पहले के समय में ५०% तक अशिक्षित थे । बाबा, दादा, लोग अधिक उम्र तक अशिक्षित रहे फि भी भगवान के प्रति श्रद्धा और निष्ठा संस्कार में आ जाता था । इसका अर्थ यह नही है कि पढ़ना नही चाहिए । पढना तो चाहिए ही । अपने पर निर्भर रहे । दूसरे के सहारे पर न रहे । पढाई के साथ संस्कार भी बना रहना चाहिए । अधिक पढ लेने से लोग भगवान तथा शास्त्रो के उपर उगली उठाने लगते है । वाद-विवाद करते है । तभी शास्त्रो की आवश्यकता आ पडती है । अभी तो दवाखाना तथा कोर्ट की संख्या बढ गई है । इस लिये लोगो मे रोग तथा आपसी झगडे

में वृद्धि हो गई है। इस तरह के आत्म रोग होने पर शास्त्र की आवश्यकता पडती है। आज के समयानुकाल शास्त्र लिखे गये है। शास्त्रो का प्रयोग वर्तमान समय में अधिक हो अति आवश्यक है। कई बार चर्चा होती है कि मंदिरो की संख्या बढ गई है। शास्त्र भी अधिक हो गये है कई सत्संग सभा भी होती है। तो पाप कर्म नही होना चाहिए। तो इसके जगह पर सोचे कितने दवाखाने बढ गये है तो किसी को रोग नही होना चाहिए। पाप कर्म मे वृद्धि हो रही है। रोग भी बढता जा रहा है। अंदर अंदर क्लेश और झगडा हो रहा है। इसके लिये कठोर नियम भी बने है। तो भी लोग गलत कर रहे है। क्योकि ? किसी को किसी का भय नही है। नये नियम आने पर थोडे समय के लिये अपराध रुक जाता है। मानव का स्वभाव ऐसा हो गया है। जो बदलता ही नही है। क्योकि ? शरणागति से स्वभाव बदलता है। मनुष्य शरणागत हो इसके लिये सत्संग और मंदिर आवश्यक है। पापकर्म रोकने के लिये सद्विचार लाना होगा। जो सत्संग से ही सम्भव है। दवाखाने में शरीर की इलाज होती है। मन का इलाज मंदिर में होता है। जिस प्रकरा कुछ रोग ६ महिने के बाद परीक्षा कराके पुनः दवा चालू रखना पडता है। इस लिये मन आत्मा के इलाज के लिये मूर्ति के समक्ष बैठ कर ध्यान करना पडता है। हमारे आत्मा में कौन सा रोग है। उसका शास्त्र में उपचार हो। हमे स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तरह कुछ बिमारी होने पर जैसे बुखार इसे शरीर के तापमान से जान सकते है। सर्दी - खांसी को उनके लक्षण देखकर समझ जाते है। इस आधार पर दवा दी जाती है। लेकिन अन्तरमन में क्या रोग है। उसे हमें या भगवान को पता चलता है। कि हमारे अंदर यह अवगुण है। सच्चे दिल से स्वीकार कर लेने पर वही से उपचार शुरु हो जाता है। सत्संग और सच्चे मन से भूल को स्वीकार कर लेना चाहिए। क्योकि ? भगवान की अतिकृपा से सत्संग प्राप्त होता है। मंदिर की सीढीयाँ चढ़ सकते है। कभी आते-आते मंदिर बंद हो जाता है। कुछ लोग कतार से बाहर निकल जाते है। अचानक बुद्धि खराब हो जाती है। सत्संग का अभाव हो जाता है। महाराज की कृपा न होने पर भी ऐसा हो जाता है। महाराज को उसे भक्ति नही देना है। तो भी ऐसा हो जाता है। हम लोगो के उपर नरनारायणदेव की असीम कृपा है। हम सब मिलकर नरनारायणदेव के चौक में तीन-चार घंटे भजन करते है। इसके लिये भगवान को धन्यवाद दे। हमारा कोई अच्छा कार्य करे। उसके लिये भी भगवान को धन्यवाद देना चाहिए। हमें कोई संकट से बचाये। तो उससे खुश हो जाते है। उसे स्मरण करते है। हमारी वस्तु यदि सडक पर गिर जाये। तथा कोई व्यक्ति हमें वापस कर दे तो जगत के लोगो का आभार मानना चाहिए। महाराज तो एक-एक श्वास दे रहे है। तो हमे प्रतिदिन भगवान को धन्यवाद देना चाहिए। इससे हमारी आध्यात्मिक प्रगति होती है।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

सत्संग समाचार

प.पू. बड़े महाराजश्री के ७८ वे प्रागट्योत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की निश्रा में श्री स्वामिनारायण म्युजियम में चैत्र वद-३ तीज के दिन ता. १९-४-२२ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री का ७८ वाँ प्रागट्योत्सव संत-हरिभक्तो की अपार उपस्थिति में मनाया गया । प.पू.ध.धु. आचार्यश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री ने एक दूसरे को केक खिलाकर प्रागट्योत्सव मनाये । प.पू. बड़े महाराजश्रीने संतो, पार्षदो को पंगत में प्रेम से भोजन खिलाये थे ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की जयंती, फूलदोत्सव

फाल्गुन सुद-१५ के दिन भरतखंड के राजाधिराज अधिष्ठाता सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर दोपहर १२ बजे कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान परमकृपालु श्री नरनारायमदेव की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने किया । ओच्छव मंडल और हरिभक्तो के उपर प्रसादी का गुलाल डालकर सभी को खुश किये । प्रसादी के विशाल चौक में सुंदर सामियाना के उपर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने लगातार डेढ घंटे तक हजारो श्री नरनारायणदेव के आश्रितो को केसूडा के रंग से सरोबोर किये । दो वर्ष के पश्चात ऐसा लाभ लेने के लिये शहर और गाँव से अधिक संख्या में आये थे । इस अवसर पर पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने सुंदर प्रबन्ध किया था ।

(चंपकभाई कोठार कार्यालय)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर रामनवमी समैया- अक्षर भवन श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र सुद-९ ता. १०-४-२०२२ रविवार के दिन सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रगट्योत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

प्रात: ७ बजे अक्षरभवन में बिराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की कर कमलो द्वारा षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इसके बाद अन्कूट आरती की गयी थी । पूजारी स्वामी कुंजविहारी स्वामीने बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज को वस्त्राभूषण पहनाकर दर्शन कराये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. पंकजभाई आत्मारामभाई पटेल (अहमदाबाद) परिवार थे ।

दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी भगवान को प्रगट्योत्सव की आरती की गयी थी । रात्रि में सभा मंडप में सुंदर कीर्तन भक्ति संत-हरिभक्तो द्वारा किया गया था । रात्रि १०-१० मिनट पर सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के प्रगट्योत्सव की आरती भव्यतापूर्वक की गयी । हजारो हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए ।

(कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री हनुमान जन्मोत्सव-मारुती यज्ञ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महारजश्री के आशिर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान प्रस्थापित धर्मकुल के कुल देव श्री हनुमानजी महाराजश्री की जन्मोत्सव चैत्र सुद-१४ ता. १६-४-२०२२ शनिवार को कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रसादी चौक में मारुती यज्ञ का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । दादा के पूजारी हजूरी पार्षद बाबु भगत और पार्षद महादेव भगत की सुंदर प्रेरणा-मार्गदर्शन में किया गया था । प्रात: ८ बजे से १२-३० तक यज्ञ की विधि मंदिर के ब्राह्मण श्री गौरांगभाईने कराया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कमलो द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती की गयी । दादा को अलौकिक अन्नकूट रखा गया था । हजारो भक्त दर्शन करके धन्य हुए । मारुती यज्ञ के यजमान प.भ.श्री गौरव वी. ठक्कर, कृष्णाल जे. गढिया, हर्ष के. पंचाल, निरव सी. भावसार, देवागं सोनी आदि परिवार थे । (गणपत भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से ता. २३-४-२०२२ शनिवार के दिन रात्रि में ८-१५ से १०-१५ तक दो घंटे का दिव्य सत्संग सभा का आयोजन मंदिर के प्रसादी मंडप में किया गया था । बहनो के लिये मंदिर के प्रांगण में बैठने की व्यवस्था की गयी थी ।

सभा का प्रारम्भ मंगलमय श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन के साथ किया गया था । इसके बाद पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (महंतश्री गांधीनगर) इस स्थान की सर्वोपरि महिमा के साथ सभा के उद्देश्य की प्राथमिक रुपरेखा समझाये थे । तथा कालुपुर मंदिर के महंत श्री पू. स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजीने भगवान श्री नरनारायणदेव के महिमा का अद्भूत वर्णन किये थे । सभा का समापन भी पापनाशक श्रीहरि के नाम धून से पूर्ण किया गया था ।

अहमदाबाद शहर परा विस्तार के मंदिर तथा पास के कडी इत्यादि मंदिर के युवक मंडल तथा अन्य हरिभक्तो तथा अन्य हरिभक्तोने श्री नरनारायणदेव का दर्शन तथा सत्संग सभा का दिव्य लाभ दिये थे। मंदिर के ब्रह्मनिष्ठ संत सभा में बैठकर शोभा बढाये थे।

सभा का लाभ प्राप्त करने वाले प्रत्येक भक्तजन के लिये भोजन की सुंदर व्यवस्था की गयी थी ।

अब यह सत्संग सभा प्रत्येक मास के दूसरे तथा चौथे शनिवार को प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गदर्शन में नियमित होता रहेगा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर का १७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी और महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का १७ वाँ पाटोत्सव ता. १४-२-२०२२ के दिन प.भ. चंदुभाई जेरामभाई पटेल परिवार यजमान पद से मनाया गया था । अपने पंडित महाराजश्री गौरांगभाईने ठाकुरजी के बालस्वरुप की पूजा-अभिषेक कराये थे । ब्र.स्वा. मुकुंदानंदजी और यहाँ के मंदिर के दोनो पूजारी स्वामी आदिने श्री घनश्याम महाराज को पंचामृत-केसर जल से महाभिषेक किये थे । सभा के बाद ठाकुरजी को अन्नकूट चढाया तथा आरती की की गयी थी ।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर द्वारा श्रीहरि स्वाभाविक चेष्ठा विवेचन कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत स.गु. स्वामी श्री धर्मस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सत्संग समाज के प्रबन्ध से ता. १४-२-२२ के दिन मनाये गये मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २०-४-२२ से २४-४-२२ तक कथा के मुख्य यजमान प.भ. श्री माधवजीभाई लवजीभाई पटेल गोरासुवाले यजमान पद पर तथा अन्य छोटी-बडी सेवा के यजमानश्री के सहयोग से स.गु. महंत शा. स्वामी श्री वासुदेवचरणदासजी के वक्तापद के साथ मधुर संगीत के साथ शुकुन चार रस्ता के पास विशाल मैदान में रात्रि का आयोजन किया गया था ।

कथा के साथ पोथीयात्रा तथा रासोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया । अहमदाबाद शहर क्षेत्र के सभी मंदिर, कांकरिया मंदिर तथा नजदीक के गाँव वाले भक्तोने कथा का श्रवण का लाभ लिये । इस अवसर पर कालुपुर, नारणघाट, गांधीनगर, कोटेश्वर, कलोल, मूली, ईडर, आद्रज, संतरामपुर, धमासणा, प्रांतिज, धोलका तथा तलाला इत्यादि धामो से ब्रह्मनिष्ठ संत, महंत आकर दर्शन का लाभ लिये थे । कालुपुर तथा जेतलपुर मंदिर की सांख्ययोगी बहनो का आगमन हुआ था । इस अवसर पर आंत्रोली देस के जलोया गाँव में नये मंदिर के लिये प.भ.श्री संदीपभाई पूंजाभाई पटेल तथा धीरजभाई फुलाभाई पटेलने अपने जमीन का दस्तावेज श्री नरनारायणदेव के नाम किये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को अर्पण करके एप्रोच मंदिर के संत मंडल को अर्पित किये । ये दोनो निष्ठावान हरिभक्त तथा यजमानश्री तथा कथा में आये सभी आमंत्रित महानुभावो को यथोचित सन्मान किया गया । स.गु. महंत शा. स्वामीश्री दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट)ने अच्छे रुप से सभा का संचालन किये थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली का १५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर) एवम् मूली मंदिर के स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. प्रकाशभाई नटवरलाल ठक्कर (विरमगामवाले) परिवार की तरफ से अजंली मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्मदेव हरिकृष्ण महाराज श्री ननारायणदेव का पाटोत्सव माघ सुद-१४ ता. १५-२-२०२२ को विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इस अवसर पर १३-२-२०२२ से दिनांक १४-२-२०२२ के मध्य सायं को श्री घनश्याम बालचरित्र की कथा शा. स्वा. व्रतवल्लभदासजी (मूली) और स.गु. महंत शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी (सुरेन्द्रनगर) और स.गु. शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल महंतश्री) ने सुंदर कथा किये थे । धामो धाम से संत-हरिभक्त आकर लाभ उठाये थे । महंत शा. स्वा. सत्यप्रकाशदासजीने सुंदर प्रबन्ध किया था ।

अंजली मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा : ता. २०-३-२२ से ता. २६-३-२२ तक यहाँ के मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा मूली के स.गु. शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई । इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । और सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवाला आये थे ।

(शा. स्वा. राधारमणदासजी - सुरेन्द्रनगर)

नारणपुरा मंदिर में श्री घनश्याम जन्मोत्सव

परात्पर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण परमकृपालु श्री नरनारायणदेव, नारायणपुरा में बिराजमान श्री घनश्याम महाराजकी असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से नारणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन प्रेरण से ता. १०-४-२०२२ के दिन प्रातः समूह महापूजा तथा २४१ किलो मैसुब का सुंदर अन्नकूट चढाया गया था । जिस में भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर आरती तथा आशीर्वाद सत्संग समाज को दिये थे । दोपहर में श्रीराम जन्मोत्सव तथा रात्रि में घनश्याम जन्मोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

(को.पूर्णस्वरुपदासजी - नारणपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर १९६ वाँ पाटोत्सव

जेतलपुर मे बिराजमान संकल्प सिद्धि महाप्रतापी देव श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी

तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प.भ. गोरधनभाई रणछोडभाई पटेल परिवार के यजमान पद से उल्लास पूर्वक मनाया गया था । फाल्गुन वद-८ को प्रातः ७-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत रुप से किया गया । इसके अन्नकूट-श्रृंगार आरती की गई । प्रसंगोचित सभा में प.पू. महाराजश्रीने यजमान परिवार प.भ. गोरधनभाई आदि परिवार का सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे । महंतश्री के.पी. स्वामीने सुंदर प्रबन्ध किये थे । (शा. धर्मनंदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वर्धानामुवाडा में मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से देहगाम तालुका के वर्धानामुवाडा गाँव में भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास से किया गया । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की कथा का आयोजन किया गया था । जिस में वक्ता पद पर सम्प्रदाय के मूर्धन्य वक्ता पूज्य स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी रहकर श्रीहरि के अद्‌भूत चरित्र का रसपान कराये । भुज धाम से महंत स्वामी द्वारा आशीर्वाद भेजे थे । कांकरिया मंदिर के महंत स.गु. ब्र. वासुदेवानंदजी, गांधीनगर मंदिर के महंत स.गु. शा. पी.पी. स्वामी, मूली मंदिर के महंत स.गु. शा. हरिप्रकाशदासजी तथा कालुपुर, नारणपुरा, नारायणघाट, बापुनगर, अंजली, हिंमतनगर, कलोल, बालवा, अनेकधामो से संत तथा ३०० से अधिक सां.यो. बहने आकर आशीर्वाद दिये थे ।

ता. २८-३-२०२२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा वर्धानामुवाडा नवीन मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा उल्लास पूर्वक किया गया । कथा पारायण के मध्य प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी भक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।

इस अवसर पर खारी-वात्रक नदी के क्षेत्रो में श्रीहरिलीला चरित्रवाला ''सत्संगविचरण'' नामक नई पुस्तक का प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया था । सम्पूर्ण मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सादरा देश के हरिभक्तो के लिये यादगार बन गया । नांदोल, दहेगाम, सोनारडा इत्यादि गाँवो के भक्तोने सेवा दी थी ।

(शा. धर्मनंदनदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल द्वारा सत्संग प्रवृति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से बोपल मंदिर के महंतश्री ध्यानप्रियदासजी तथा धर्मसुतप्रियदासजी के संयुक्त प्रयास से समस्त बोपल आसपास के क्षेत्र में सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति की गयी ।

जल्द मे ही हरिद्वार में ता. २९-३-२२ से ता. ४-४-२२ के मध्य अ.नि. खीमजीभाई भगवानदास पटेल परिवार द्वारा ''श्रीमद् भागवत सप्ताह'' का आयोजन शास्त्री श्री ध्यानप्रियदासजी स्वामी के वक्ता पद से हुआ था । जिस में बोपल, वणझर वि. गाँव के हरिभक्तोने कथा का श्रवण तथा तीर्थ का दर्शन किये थे ।

उसी प्रकार १०-४-२०२२ को चैत्र सुद-९ के पवित्र दिन पर दोपहर प्रभु श्री रामचंद्रजी का प्रगट दिवस तथा रात्रि में आराध्यदेव अक्षराधिपति श्री स्वामिनारायण महाप्रभु का प्रागट्य उत्सव हर्ष पूर्वक मनाया गया ।

कभी-कभार अपने सम्प्रदाय के मंदिरो द्वारा प्रवास कराया जाता है । इसी में ता. १६/१७-४-२०२२ के दिन संतो ने धार्मिक प्रवास का सुंदर प्रबन्ध किये थे । जिस में शामलाजी, टोरडा, ईडर, खाण, सिद्धपुर धामो का दर्शन करके हरि भक्तोने लाभ उठाया था ।

(प्रवीण उपाध्याय - बोपल मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद तथा स.गु. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री सेक्टर-२ गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा धाम में चैत्र सुद-९ श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्य दिवस के निमित्त मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज को ड्रायफ्रुट का अन्नकूट रखा गया था । जिस के यजमान श्रीजी समकालीन परम भक्तराज श्री रामदास बापा परिवार था । (उज्जवल पटेल)

यहाँ उनावा मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के ७८ वे प्रागट्योत्सव के निमित्त श्री राधा-कृष्ण महाराज को ड्रायफ्रुट का अन्नकूट रखा गया था । भजन-कीर्तन का कार्यक्रम भी रखा गया था । इस अवसर पर गांधीनगर से महंत स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत-मंडल सहित पधारे थे । जिस में शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी कथा वार्ता करके आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर के यजमान भक्तराज श्री रामदास बापा परिवार रहा था ।

(जेनिस पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत पू. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मांडल श्री स्वामिनारायण मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव ता. ११-४-२०२२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करमकलो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती किये । पूरे गाँव में सभी हरिभक्त को आशीर्वाद दिये । दोनो मंदिर के श्री नरनारायणदेव के नाम का दस्तावेज प.पू. महाराजश्री को अर्पण किये थे । जेतलपुर से महंत श्री के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से गाँव के सभी हरिभक्तोने उत्तम प्रबन्ध किये थे । (कोठारीश्री मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से यहाँ के मंदिर के महंत

स्वामी की प्रेरणा से ता. १४-३-२०२२ एकादशी के दिन सत्संग सभा हुई थी। जेतलपुर के शा. स्वा. धर्मनंदनदासजीने सुंदर कथा का लाभ दिये थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ९-११-२०२२ से ता. १३-११-२०२२ तक उल्लास पूर्वक किया जायेगा। (महंत स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद तथा स.गु. महंत श्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय रात्रि कथा की गयी। ता. ९-३-२२ से सत्यसंकल्पदासजी ता. १०-३-२२, ता. ११-३-२२ शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई।

ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट आरती संतो द्वारा की गयी। घाम-धाम से संत तथा स्थानीक हरिभक्त आये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. भगवानभाई पिताम्बरदास पटेल परिवार था। (धरमपुर के) (देव स्वामी उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर का २७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर (गांधीनगर) का २७ वाँ पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर गांधीनगर से महंत शा. पी.पी. स्वामी, एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी आदि संत मंडल ने ठाकुरजी का अभिषेक-अन्नकूट की आरती लेकर कथावार्ता का लाभ दिये थे। शायं हरिभक्तो को समूह प्रसाद का आयोजन किया गया था। पाटोत्सव के यजमान प.भ. जनकभाई गोकुलभाई पटेल परिवार रहा था। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अम्बापुर (गांधीनगर) का ४ था पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबापुर के चौथे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी के समक्ष महापूजा तथा अन्नकूट आदि किया गया था। इस अवसर पर गांधीनगर मंदिर से महंत शा. पी.पी. स्वामी और घमासणा मंदिर से स.गु. जे.पी. स्वामी और विश्वविहारी स्वामी पधारे थे। सभी संतोने कथा-वार्ता का लाभ पहुचाया। (मनीष पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शहेरा का २३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से शहेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का २३ वाँ पाटोत्सव ता. २५-२-२०२२ माघ वद-९ के दिन विधिवत मनाया गया। जिस में विष्णुयज्ञ अन्नकूट-अभिषेक ठाकुरजी का किया गया। नारायणमुनि स्वामी कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को लाभ दिये। (कोठारीश्री राधेश्याम एम. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राजपुर (ता. कडी) का १३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लदासजी (वडनगर) के सुंदर मार्गदर्शक प्रेरणा से प.भ. परसोतमदास छगनदास पटेल परिवार तरफ से राजपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का १३ वाँ पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया। ठाकुरजी की अन्नकूट अभिषेक वडनगर मंदिर के संत मंडल द्वारा किया गया। शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजीने सभी हरिभक्तो का कथा-वार्ता का लाभ दिये।

(शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी - वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा का ६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरेधर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२) का ६ वाँ पाटोत्सव पौष वद-७ को प.भ. पटेल अनिलभाई नरसिंहभाई परिवार की तरफ से किया गया था। अयोध्या मंदिर के महंत शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी कोठारी सर्वेश्वर स्वामी और सच्चिदानंद स्वामीने ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट करके हरिभक्तो को कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। (कोठारी के.बी. प्रजापति)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर चूडा का ११३ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली मंदिर के स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से स.गु. देवानंद स्वामी द्वारा बनाये गये प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर चूडा का ११३ वाँ पाटोत्सव उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर ''श्रीहरि गीता'' पंचदिनात्मक पारायण स.गु. स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से हुई थी। धामो-धाम से संत और सांख्ययोगी बहने आयी थी। पूरे अवसर सभा का संचालन स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

नारायणपुरा अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर सम्पर्क : ७०४६७१२०००, ९८७९९५८५०४

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के वयोवृध्ध, ज्ञान वृध्ध संत स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लदासजी गुरु स्वामी भक्तिवल्लभदासजी (वर्त. पोरडा कठलाल मंदिर) माघ सुद-४ ता. ४-२-२०१२ दिन शुक्रवार प्रातः ४-३७ मिनट पर श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए। आप के अक्षरवास से अहमदाबाद देश में एक निष्ठावान संत की कमी आयी है।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पोष सुद-१ प.भ. रसिकभाई शंकरदास पटेल (मोसण), प.भ. कीर्तन पेथाणी (निकोल) । **पोष सुद-३** प.भ. सोनी रमीलाबेन राजेन्द्रभाई (अमदावाद), प.भ. पटेल संजयभाई बिपीनभाई (विसनगर) । **पोष सुद-४** प.भ. शिवजी देवजी वेकरीया (रामपरवेकरा-कच्छ), प.भ. प्रेमजी शामजी वेकरीया, धनबाई प्रेमजी (रामपरवेकरा-कच्छ), प.भ. डबासीया वालजी शामजी, कांताबेन वालजी (कोडकी-कच्छ), अ.नि.प.भ. ईश्वरभाई चतुरदास पटेल (लवारपुर), प.भ. नटरलाल शंकरलाल पटेल (कलोल), प.भ. दिनेशभाई रमणभाई ओझा (अमदावाद), प.भ. कैलासबेन पंकजभाई पटेल (मोयद) । **पोष सुद-६** प.भ. आदित्य अनीलकुमार चौधरी (बालवा), प.भ. कोकीलाबेन विठ्ठलभाई भावसार (न्यु राणीप) । **पोष सुद-७** प.भ. पटेल जीज्ञेश बाबुभाई (अमदावाद), प.भ. प्रविणभाई एम. सुरती (अमदावाद), अ.नि. गोदावरीबेन काळाभाई ठुम्मर (अमदावाद), अ.नि. गौतमभाई भगवानदास पटेल (ईटादरा), प.भ. पिनाकीनभाई रमणीकलाल रावल (अमदावाद), अ.नि. हंसाबेन छगनभाई भायाणी (अमदावाद), प.भ. प्रविणभाई त्रिभोवनदास पटेल (अमदावाद), अ.नि. प.भ. देवु भगत जय सियाराम (गांधीनगर), प.भ. मेहुल दिनेशभाई देवाणी (निकोल), अ.नि. जयंतीभाई ोडाभाई (अमदावाद) । **पोष सुद-८** प.भ. ललीताबेन नरहरिभाई बेचरभाई पटेल (झुंडाल) । **पोष सुद-९** प.भ. कनैयालाल एस. पटेल (अमदावाद), प.भ. पटेल कानजीभाई घेलभाई पारायण प्रसंगे (गवाडा) । **पोष सुद-१०** प.भ. डाह्याभाई नारणदास पटेल (माणसा), प.भ. जय विजयभाई पटेल (उनावा), प.भ. हिराबेन अंबालाल (राणीप), प.भ. पटेल जगदीशचंद्र रतिलाल (अमदावाद), प.भ. परेशभाई बाबुभाई वावडीया पारायण प्रसंग पर (बापुनगर), प.भ. देवसी मूळजी वेकरीया (नारायणपर-कच्छ) । **पोष सुद-१२** प.भ. पूजाबेन धवलकुमार पटेल (गोठीब), हरिॐ सत्संग मंडळ (सरसपुर), अ.नि. स.गु. स्वामी हरिप्रसाददासजी गुरु स्वामी भक्तिवल्लभदासजी (वडनगर मंदिर), प.भ. राजेशभाई पटेल (एटलान्टा), प.भ. पटेल मनाली जीनलकुमार (अमदावाद), प.भ. जैनि अशोकभाई नकुम (जामंभाळीया), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (भुज-कच्छ), प.भ. पटेल घनश्यामभाई चंदुभाई (लवारपुर), प.भ. दर्शनभाई वी. महेता (अमदावाद), अ.नि. अरविंदाबेन हरदत्तराय शुकल (अमदावाद), अ.नि. समजुबा तथा अ.नि. रवजीभाई पानसुरीया (अमरेली), प.भ. सूर्यकांत शांतिलाल मकाणी (मुंबई), प.भ. हर्षा विष्णुभाई पटेल (अमदावाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. शांतिबेन कांतिभाई चावडा (बळोल-भाल), प.भ. पटेल रमेशभाई देवजीभाई (अमदावाद) । **पोष सुद-१३** प.भ. मावजी शामजी डबासीया (भुज-कच्छ), प.भ. सोनी कुंदनबेन दिनेशकुमार (अमदावाद), जय स्वामिनारायण, प.भ. मीनाबेन रश्मिकांत पटेल (कुहा), प.भ. मुकेशभाई पी. वेकरीया (निकोल), प.भ. लीलाबेन कनैयालाल पटेल (अमदावाद) । **पोष सुद-१४** प.भ. पोपटभाई मणीभाई (नारणपुरा), अ.नि. काशीबेन हरिभाई (सीतापुर), अ.नि.प.भ. पूनमभाई मगनभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. पटेल सुमित्राबेन रमेशभाई (राणीप), प.भ. वर्षाबेन अश्विनभाई सोनी (अमदावाद), प.भ. शिल्पाबेन परेश पूजारा (अमदावाद) । **पोष सुद-१५** अ.नि. शांतिलाल दानाभाई गढदरा (हांसोल).

पोष वद-१ प.भ. नटवरभाई ईश्वरभाई पटेल (हिरापुरा), प.भ. खीमजी हरजी भुवा (सुपर-कच्छ) । **पोष वद-२** प.भ. शिवजी देवजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), अ.नि. भाटीया डाह्यालाल अंबालाल (लुणावडा), अ.नि. कौशलेन्द्र भरतभाई पटेल (बायड), प.भ. हर्षदभाई रमणलाल सोनी (अमदावाद) । **पोष वद-४** प.भ. ईशाबेन भूपतभाई खूंट, प.भ. डॉ. अविनाशभाई भरतभाई पटेल (पाटणपुरा). **पोष वद-५** प.भ. दिपकभाई रमणभाई भावसार (अमदावाद), प.भ. पटेल अश्विनभाई सांकळचंद (माणसा), प.भ. पटेल संकेतभाई विनोदभाई (वस्त्राल), प.भ. मावजी कानजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ) । **पोष वद-६** चि. जयंतभाई तथा मिरलबेन, अ.नि. धीरूभाई हरिभाई डोबरीया (निकोल) । **पोष वद-७/८** प.भ. भगवानजीभाई लालजीभाई अधेरा (अमेरिका), अ.नि. माजी कोठारी स्वामी जयकृष्णदासजी गुरु शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर मंदिर), अ.नि. पुरबाई वालजी भूडीया (माधापर-कच्छ) । **पोष वद-९** प.भ. पटेल विमलाबेन रमेशभाई (मोसण), प.भ. पटेल अमरकुमार विष्णुप्रसाद (नारायणनगर), प.भ. पटेल मंजुबेन धूळाभाई (सलाल) । **पोष वद-१०** अ.नि.प.भ. पटेल लालभाई चतुरभाई (वावोल), प.भ. जयंतिलाल कानजीभाई ठक्कर (बावळा), प.भ. रसिकभाई परमानंददास चांदलीया (अमदावाद), प.भ. रिंकुबेन पियुषकुमार शेलडीया (बापुनगर) । **पोष वद-११** प.भ. एक हरिभक्त (एकादशी) । **पोष वद-१२** प.भ. पानसुरीया अनुपकुमार बाबुभाई (अमदावाद), प.भ. आरोही प्रजापति (अमदावाद), अ.नि. कल्याण नारण हिराणी (मेघपर-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (भुज-कच्छ), प.भ. सुाभाई धूळाभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. डाह्याभाई नारणदास पटेल (अमदावाद), प.भ. याज्ञिकभाई मनसुभाई हिराणी (कोटकी-कच्छ), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (भुज-कच्छ) । **पोष वद-१३** प.भ. पांभर राजेशभाई मनुभाई (अमदावाद), प.भ. पुरीबेन धरमशीभाई

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

(सियानगर), प.भ. त्रिवेदी हरिकृष्ण संजयभाई (अमदावाद), श्री स्वामिनारायण मंदिर (हिंमतनगर), प.भ. रविभाई प्रदिपभाई पटेल (अमदावाद)। **पोष वद-१४** जयश्री स्वामिनारायण प.भ. धीरूभाई (माणेकपुर).

महा सुद-१/२ अ.नि. स.गु. स्वामी जगदीशप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वा. नारायणमुनिदासजी (वडताल)। **महा सुद-३** अ.नि.प.भ. प्रफुलभाई रेवाशंकर शुकल (वडोदरा). **महा सुद-४** अ.नि. वसंतबेन जयंतीलाल शाह (मुंबई) । **महा सुद-५** अ.नि. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी (अमदावाद), प.भ. पटेल मुकेशभाई हिराभाई (मोयद), प.भ. जे. के. चीनाराणा (नत्राणा-कच्छ), अ.नि. चंद्रिकाबेन नवीनचंद्र मारफतीया (अमदावाद), अ.नि. रमीलाबेन अरजणभाई पोकार (ईन्दौर), प.भ. प्रफुल परी (अमदावाद), प.भ. रंजनबेन अरविंदभाई चौधरी (ईश्वरपुरा-बदपुरा) । **महा सुद-६** प.भ. जे. के. चीनाराणा (नत्राणा-कच्छ), प.भ. जगदीशभाई देवजीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. केया अतुलभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. पटेल मिहिर जसुभाई (धमासणा), अ.नि. कुंवरजीभाई हिरालाल वाघजीयाणी (माधापर-कच्छ)। **महा सुद-७** अ.नि. गोविंदभाई शंकरदास पटेल (मोसण)। **महा सुद-८** प.भ. कोकीलाबेन जयंतीलाल पटेल (डांगरवावाळा), अ.नि. नरसिंहभाई पोपटभाई पटेल (वाघमोडीया)। **महा सुद-८** अ.नि. सविताबेन नारणभाई गोहेल (जुनागढ)। **महा सुद-११** अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (अमदावाद) । **महा सुद-१२** प.भ. माणेकलाल अंबालाल पटेल (नरोडा), अ.नि.प.भ. अंबाबेन परसोतमभाई गढीया (उगामेडी), अ.नि. भोळाभाई मोतीभाई पटेल (राणीप), प.भ. रोबेन चंद्रेशभाई पटेल (बाकरोल), प.भ. देवजी करशन खीमाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. लाभुबेन धनजीभाई (माधापर-कच्छ), प.भ. हितेषभाई कांतिभाई चोडवडीया (बापुनगर), प.भ. गीरीशचंद्र एस. श्रीवास्तव (अमदावाद), प.भ. हसमुभाई रामजीभाई वघासीया (अमदावाद), प.भ. तेजेशभाई मगनभाई पटेल (बोदाल), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. पटेल सुरेशभाई अंबालाल पटेल (अमदावाद), प.भ. मनजी शीवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. जयंतिभाई पटेल । **महा सुद-१३** प.भ. धमांश ईशान पटेल (उंझा), अ.नि. विठ्ठलभाई मणीलाल करशनदास (मोसण), प.भ. वृषांक निलेशभाई काछडीया (अमदावाद), प.भ. केवलकुमार भगुभाई पटेल (उत्तरसंडा)। **महा सुद-१४** प.भ. पटेल भरतकुमार कांतिलाल (कडी), प.भ. पटेल दिप्तिबेन प्रतिककुमार (नारदीपुर), प.भ. देवी पंड्या (भावनगर), प.भ. पटेल गोपालदास सोमदास (वडु)। **महा सुद-१५** प.भ. जयाबेन मूळजीभाई सांला (नासिक), अ.नि. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (कालुपुर मंदिर), प.भ. प्रज्ञाबेन तथा तरलबेन तथा नमनभाई (गोंडल).

महा वद-१ अ.नि. कोकीलाबेन भरतभाई कंसारा (अंजार-कच्छ), प.भ. दयाबेन भगवानदास (लंडन), प.भ. कुरजी नाथा डबासीया (मानकुवा-कच्छ)। **महा वद-२** प.भ. शारदाबेन नाथालाल पटेल (जोरणंग), अ.नि. घनश्यामभाई नागजीभाई देसाई (सुरत)। **महा वद-३** अ.नि. घनश्यामभाई कानजीभाई कोटडीया (बापुनगर), प.भ. चमनभाई कानजीभाई कोटडीया (निकोल), प.भ. कंकुबाई कुंवरजी भंडेरी (सुपर-कच्छ) । **महा वद-४** अ.नि.प.भ. कीर्तिकुमार बी. पटेल (अमदावाद), प.भ. ज्योत्सनाबेन दशरथभाई रावल (अमदावाद), प.भ. पटेल नटवरभाई हरजीवनदास (नरोडा), अ.नि.प.भ. गामी कांतिलालभाई तथा प.भ. रमीलाबेन गामी (भुज-कच्छ) । **महा वद-५** प.भ. कमलेशभाई शर्मा (अमदावाद), प.भ. अनिलभाई मफतभाई पटेल (झुंडाल) । **महा वद-६** अ.नि. लक्ष्मणभाई लालजीभाई (बळदीया-कच्छ)। **महा वद-७** प.भ. वेदांतभाई विजयभाई हयाणी (अमदावाद)। **महा वद-८** प.भ. कानबाई विसराम नारण भुवा (सुपर-कच्छ), प.भ. रामबाई करशन भुवा (सुपर-कच्छ), स.गु. स्वामी धर्मजीवनदासजी गुरु स्वा. गोविंदप्रसादासजी (कालुपुर मंदिर), प.भ. साकरबेन राघवभाई वाडदोरीया (निकोल)। **महा वद-९** अ.सौ. शांताबेन अमृतभाई चौधरी (आमजा), पूज्यश्री बिन्दुराजा (स्वा. बाग अमदावाद), प.भ. ईश्वरलाल पित्रोडा (अमदावाद)। **महा वद-११/१२** हरिॐ परिवार प.भ. शैलेषभाई भावसार (अमदावाद) । **महा वद-१३** प.भ. मोदी नारायणभाई चिमनभाई (महेसाणा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. कानजी गांगजी हालाई (माधापर-कच्छ), प.भ. विनोदभाई जयंतीलाल राधनपुरा (राजकोट), सांख्ययोगी निलमबेन (उपलेटा), प.भ. पटेल ट्विंकल सुरेशभाई (राजपुर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), सांख्ययोगी वेलीबाई (मानकुवा-कच्छ)। **महा वद-१३** अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (अमदावाद)। **महा वद-३०** प.भ. अनुराग मनहरराम पटेल (राजस्थान), प.भ. रवजीभाई प्रेमजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. धीरज धनजी राबडीया (वाडासर-कच्छ), प.भ. भरत देवजी वेकरीया (केरा-कच्छ), प.भ. परमार कौशिक प्रविणभाई (मुंबई), अ.नि. नारणभाई धरमशीभाई शेढा (सुरत), अ.नि. रोहित रमेश हालाई (दहींसरा-कच्छ)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

पर्व के अवसर पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा क्रिकेट लीग आयोजित की गयी थी। उस में प.पू. लालजी महाराज की टीम चैम्पीयन बनी। प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ टीमकी फाईल तसवीर।

मेथाण गाँव (मूली देश) नूतन मंदिरमें मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

नारणपुरा-[illegible] मंदिर में सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री।

भाळुपुर गाँव के मंदिर में ठाकुरजी की आरती करते तथा खोरज गाँव में २०० वर्ष प्राचीन छत्री का जीर्णोद्धार के बाद उद्घाटन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी के चौक में फूलदोलोत्सव के अवसर पर रंगोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री।

अमेरिका के देवस्थ में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलकी कोन्फरन्स में प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ युवको।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये
ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani